14-5-2001

अपने पुराने संस्कारों को भस्म करने में एवररेडी बनो

सदा के रीति प्रमाण बाबा के पास पहुँची। तो बाबा कुछ टाइम मुझे दिखाई नहीं दिये। मैं खड़ी थी तो थोड़े ही समय में बाबा हमारे जगदीश भाई को साथ लेकर आये। मैंने कहा बाबा आप कहाँ गये थे? तो बाबा ने कहा कि मैं बच्चे को सैर करा रहा था। तो मैंने पूछा बाबा कहाँ का सैर करा रहे थे? बाबा ने कहा कि इस बच्चे की दिल थी कि जैसे आप वतन में बैठ करके सब सेन्टर्स का सैर करते हैं, बच्चों से मिलन भी मनाते हैं, तो अभी मैं भी शरीर के बंधन से मुक्त हूँ, मैं भी यह सैर करने चाहता हूँ। आप बहुत जल्दी-से-जल्दी सैर कैसे करते हैं? तो बाबा ने कहा कि आज पहले तो जगदीश भाई को मधुबन की सीन दिखाई कि कैसे सब भाई-बहन आ रहे हैं। वह सीन दिखाने के बाद, फिर इसने कहा अभी मधुबन में क्या हो रहा है? तो बाबा ने सुनाया कि अभी आपके शरीर का अन्तिम संस्कार हो रहा है। तो कहा बाबा आप वतन में बैठकर कैसे देखते हो? बाबा ने कहा यह तो सेकण्ड का काम है। जैसे टी.वी., रेडियो का स्वीच आन करते हैं, ऐसे मैं संकल्प करता हूँ, यह संकल्प ही मेरा स्वीच है। बस संकल्प से, मन की गति से कहाँ भी पहुँच सकते हैं। जगदीश भाई ने बाबा को कहा कि बाबा मैं भी यह सीन देख सकता हूँ? तो बाबा ने कहा आप भी संकल्प का स्वीच आन करो क्योंकि अभी वतन में आप फरिश्ते रूप में हो। इस समय आपके पास सब शक्तियां इमर्ज हैं। आप जिस शक्ति का भी स्वीच आन करो, वह शक्ति आपको अनुभव करायेगी। तो बाबा ने उसको यहाँ की सब सीन दिखाई। जगदीश भाई ने कहा कि बाबा यहाँ बैठकर तो सब बहुत अच्छा, स्पष्ट दिखाई देता है। यह सारी सभा तो बहुत सजी हुई है। तो बाबा ने कहा देखो यह है आपकी सेवा और गुप्त स्नेह का रेसपान्ड, जो इतने सब पहुँच गये हैं! तो जगदीश जी बोले बाबा, इतनी टीचर्स अपना सेन्टर्स छोड़कर आ गई हैं! तो बाबा ने कहा देखो सभी एवररेडी का पाठ पक्का करके आई हैं। बाबा ने या दादी ने, ड्रामा ने बुलाया और देखो सब एवररेडी होके आ गये हैं, किसने सोचा ही नहीं कि सेन्टर का क्या होगा, ट्रेन मिलेगी या नहीं मिलेगी! तो

एवररेडी का प्रैक्टिकल पाठ बच्चों ने दिखाया, इसलिए बाबा भी बच्चों को बहुत-बहुत मुबारक देते हैं और आगे के लिए भी बच्चों को यह पाठ पढ़ा रहे हैं कि जैसे अभी आपको बुलावा हुआ तो पहुँच गये। यह स्नेह का रेसपान्ड दिया। ऐसे हर कार्य में भी यही पाठ पक्का करना। ऐसे कहते बाबा बहुत राज़युक्त मुस्कराने लगे।

मैंने कहा बाबा आप बहुत मीठा मुस्करा रहे हो, ऐसे लगता जैसे आपके मुस्कराने में कोई राज़ है। बाबा बात क्या है? तो बाबा बोले बच्ची, जैसे मधुबन में सभी इशारा मिलते ही पहुँच गये, वैसे अगर बाबा कहे कि बच्चे एक सेकण्ड में अपने पुराने संस्कारों को आग में जला दो, ऐसा भस्म कर दो, जो अंश मात्र भी नहीं रहे तो क्या बच्चे इसमें एवररेडी होंगे! जैसे इस बात में पास हो गये, ऐसे इस बात में भी पास हो जायेंगे? मैंने कहा बाबा, वह रिज़ल्ट तो आप जानो, हम लोग तो नहीं जान सकते। तो बाबा ने कहा बाबा को ड्रामानुसार बच्चों में भी निश्चय है और बच्चों को बाबा में निश्चय भी है तो दिल का प्यार भी है। निश्चय और प्यार यह दोनों ही बल बच्चों में हैं। तो जहाँ निश्चय है वहाँ विजय होती है, जहाँ प्यार होता है वहाँ कुर्बानी होती है। मैजारिटी बच्चों के पुरुषार्थ में परसेन्टेज है लेकिन प्यार में परसेन्टेज नहीं है, इसलिए बच्चे प्यार में कुर्बानी करने में क्या देरी करेंगे! तो जैसे अभी पेपर में सब पास हो गये ऐसे फाइनल पेपर में भी ज़रूर पास हो जायेंगे। टोटल रिज़ल्ट में बाबा ने देखा, कि बापदादा ने जो [illegible] मास में [illegible] परसेन्ट का इशारा दिया था, उसी प्रमाण मैजारिटी सभी के अन्दर लक्ष्य है कि हम बाबा को परिवर्तन का रेसपान्ड दें लेकिन लक्षण में परसेन्टेज है। सभी तरफ की रिज़ल्ट में अटेन्शन रहा है, लक्ष्य को भी अन्डरलाइन किया है लेकिन टेन्शन फ्री हो जायें, लक्षण को भी 100 परसेन्ट अन्डरलाइन करें तो क्या नहीं हो सकता!

फिर बाबा ने जगदीश जी को कहा आप क्या समझते हो? तो जगदीश भाई ने कहा मेरी तो यही एक आश रह गयी, हमने सोचा था कि हम संगठित

रूप में एक दो को अभी ऐसा पुरुषार्थ करायें ताकि बाबा जो चाहते हैं उस रीति सभी फुल परसेन्टेज में पास हो जाएं। तो बाबा ने कहा तुम तो ᑎᑎ के बजाए ᑎᒉ मई को आ ही गये। अच्छा है शरीर से मुक्ति तो मिली। तो पुराने संस्कारों से भी मिल गई। अभी तो नया होगा, नये संस्कार होंगे। मैंने कहा बाबा यह आया तो सही, ᑎᑎ के बजाए ᑎᒉ में आ गया लेकिन तकलीफ क्यों सहन होती है? मैंने जगदीश जी की तरफ आँखें करके यह बात कही, हमने सोचा कि देखें यह क्या कहता है! तो वह चुप रहा लेकिन बाबा ने कहा कि इस बच्चे की काफी समय से एक आश थी कि बाबा मुझे धर्मराज पुरी में नहीं भेजना, यहाँ भले मुझे कर्मभोग चुक्तू कराना। और दूसरी आश थी कि मेरा मृत्यु बहुत सहज हो। लेकिन बाबा ने जैसे सुनाया है कि बच्चा डबल नॉलेजफुल बनने का बैलेन्स नहीं रख सका, सेवा खूब की, शरीर पर ध्यान कम दिया इसलिए बीमारी बढ़ गई और तकलीफ सहन करनी पड़ी। लेकिन मृत्यु बहुत सहज हुआ। यह इसकी सेवा का पुण्य है, जो ऐसे सहज गया जो सामने वालों को भी पता नहीं चला।

उसके बाद मैंने कहा कि बाबा सभी भाई-बहनें जो आये हैं, सबने बहुत-बहुत याद दी है और दादी ने तो सन्देश दिया है कि इतने सब भाई-बहन आये हैं तो बाबा आ जाए। तो बाबा मुस्कराया, मुस्करा के हाँ ना नहीं की, बाबा चतुरसुजान है ना। तो ऐसे ही बात को चला दिया और कहा कि तुमने जगदीश भाई से पूछा कि यहाँ वतन में आकर क्या कर रहा है? तो मैंने जगदीश जी की तरफ देखा, तो जगदीश जी बोले कि बाबा ने मुझे कहा है - अभी तुमको जो भी करना है, अमेरिका देखना है, स्पेश देखना है, राकेट में सैर करनी है, परमधाम का सैर करना है या सेन्टर्स का, जो भी आपकी दिल हो वह पूरी कर लो फिर तो आपको पार्ट बजाना पड़ेगा। ऐसे कहते जगदीश जी चुप हो गये।

फिर मैंने कहा बाबा आप धीरे-धीरे सभी को एडवांस पार्टी में ले रहे हो, इसका मतलब क्या, यहाँ भी तो चाहिए। तो बाबा ने कहा क्यों तुमको डर

लगता है क्या? मैंने कहा बाबा डर तो नहीं लगता है, मैं तो वतन में आ जाऊंगी। लेकिन आप नम्बरवार सबको लिये जा रहे हो। तो बाबा ने कहा एडवांस पार्टी में सब प्रकार की आत्मायें चाहिए। अभी एडवांस पार्टी के प्लैनिंग बुद्धि में फोर्स आयेगा। आप लिस्ट निकालना जिन्होंने यज्ञ में सेवा करते-करते शरीर छोड़ा है, उसमें सब प्रकार के बच्चे हैं। स्थापना में सभी प्रकार के चाहिए ना! मैंने कहा बाबा यहाँ कमी हो रही है और आप वहाँ इकट्ठे कर रहे हो। तो कहा कि आप लोगों के लिए ही कर रहा हूँ, क्या आपको योगबल से जन्म नहीं लेना है! आपके लिए ही तैयारी करा रहा हूँ। यह ड्रामा की भावी बनी हुई है, जो बाबा भी बदल नहीं सकता। इसलिए बच्ची एडवांस पार्टी एडवांस में काम कर रही है और आप अपने संस्कार परिवर्तन का एडवांटेज उठाओ, जो बाबा आर्डर करे फुल परिवर्तन। मैंने कहा बाबा फुल परिवर्तन कैसे करेंगे! तो कहा मैं भी समझता हूँ कि ब्रह्मा बाबा जितना सम्पूर्ण तो सब नहीं बनेंगे, नहीं तो सब नम्बरवन हो जायें, होंगे तो सब नम्बरवार, लेकिन अपने हिसाब से तो सम्पूर्ण बनें। आर्डर करूं कि बस संस्कार परिवर्तन, तो एक सेकण्ड में एवररेडी हो जाएं, तो इसका एडवान्टेज लेना है।

फिर मैंने सभी की जगदीश भाई को याद दी तो जगदीश भाई ने कहा मेरी भी खास मेरे साथी पाण्डवों को और विशेष टीचर्स को याद देना, जो इतना जल्दी मेरे प्रति पहुँच गई हैं। नाम मेरा है लेकिन पहुँचे तो बाबा के प्यार में हैं। टीचर्स के प्रति बाबा को कहा कि बाबा आप भी इन्हों को बहुत-बहुत याद-प्यार दो ना। तो बाबा ने कहा मेरी तो याद-प्यार है ही और मैं आज अमृतवेले जो विशेष पावरफुल योग में बैठेंगे, उन सभी बच्चों को कोई-न-कोई शक्ति की विशेष गिफ्ट दूंगा। तो जगदीश भाई ने कहा कि हमारे तरफ से भी कह दो कि यह गिफ्ट है। तो सभी आज अमृतवेले विशेष यह अनुभव करना। थके हुए भी हो तो भी खास अटेन्शन देके कोई-न-कोई शक्ति की अनुभूति करना। हिम्मत बच्चों की मदद बाबा की एक्स्ट्रा होगी। फिर जगदीश

भाई ने खास हॉस्पिटल वालों को बहुत याद किया। कहा हॉस्पिटल वालों ने (डाक्टर्स, नर्सेज आदि) सभी ने जो सेवा की वह भूलने वाली नहीं है और चक्रधारी बहन, साधना बहन, योगेश भाई, चिमन भाई इन सबने जो प्यार से सेवा की है, उन्हें भी बहुत-बहुत शुक्रिया कहना। फिर जब मैं बाबा से छुट्टी ले रही थी तो खास निर्वैर भाई को याद किया। कहा निर्वैर भाई ने बहुत तोड़ निभाई और बहुत दिल से मेरी सेवा की। फिर कहा कि दादी ने भी मेरी बहुत सेवा की। इतना काम होते हुए भी रोज़ मेरे पास ओम् शान्ति करने ज़रूर आती थी और लास्ट में भी ओम् शान्ति करके गई। तो दादी ने बड़े दिल से जैसे दुआयें दी। इसलिए दादी को भी याद किया। फिर बाबा ने कहा, अभी तो तुमको बहुत टाइम हो गया सभी नीचे इन्तजार कर रहे हैं। ऐसे याद-प्यार लेते मैं नीचे आ गई।